आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2358 • उदयपुर, मंगलवार 08 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

सेवा–जगत्
मानवता का प्रतीक आपका अपना सेवा संस्थान

अब देश में छाया बीकानेर मॉडल

भीलवाड़ा मॉडल के बाद अब देश में बीकानेर जिले की 'ऑक्सीजन मित्र योजना' को सराहते हुए इसे पूरे देश में लागू करने का सुझाव दिया है। केंद्र ने सभी राज्य सरकारों व कलक्टरों को चिट्ठी लिखकर ऑक्सीजन का अपव्यय रोकने को कहा है। हाल ही देशभर के जिला कलक्टरों से वीडियो कांफ्रेंसिंग में पीएम ने ऑक्सीजन मित्र योजना को लेकर बीकानेर कलक्टर की पीठ थपथपाई थी। कलक्टर ने पीबीएम अस्पताल में 'ऑक्सीजन मित्र योजना' लागू की थी। योजना से अस्पताल में ऑक्सीजन की खपत 800 से 600 सिलेंडर पर आ गई। वर्चुअल संवाद में कलक्टर ने बीकानेर में कोविड–प्रबंधन की जानकारी दी थी।

ऐसे रोका अपव्यय

- पीबीएम अस्पताल में 100 नर्सिंग स्टूडेंट को ऑक्सीजन मित्र नियुक्त किया गया।
- आठ–आठ घंटे की पारियों में ऑक्सीजन मित्रों को ऑक्सीजन फ्लो मानिटरिंग की जिम्मेदारी सौंपी गई।
- ऑक्सीजन मित्र बेड टू बेड ऑक्सीजन के फ्लो को मेंटेन करते। यानी जरूरत से ज्यादा ऑक्सीजन फ्लो है तो कम करना और धीमा फ्लो है तो उसे बढ़ाना।
- ऑक्सीजन का अपव्यय करने वाले मरीजों और उनके परिजनों को समझाया। इससे कोविड अस्पताल में प्रतिदिन 800 सिलेंडर की खपत होती थी, वह घटकर 600 पर आ गई।

कलक्टर से बातचीत

ऑक्सीजन मित्र का कंसेप्ट जेहन में कैसे आया ?

अप्रेल माह में कोविड हॉस्पिटल के निरीक्षण के दौरान देखा कि खाना खाते समय, शौचालय जाते समय भी ऑक्सीजन का फ्लो बंद नहीं किया जा रहा। इससे ऑक्सीजन का अपव्यय हो रहा था। तब मरीजों की मॉनिटरिंग की व्यवस्था शुरू की।

कंसेप्ट को केंद्र ने सराहा, आप क्या कहना चाहेंगे ?

ऑक्सीजन के अपव्यय को रोकना जरूरी था। ऑक्सीजन के अपव्यय को रोकने का कांसेप्ट लागू किया और परिणाम उम्मीद से ज्यादा अच्छे रहे। अब केंद्र ने इस कंसेप्ट को सभी राज्यों व जिलों को अपनाने का सुझाव दिया, जो अच्छी बात है।

कोविड में आमजन को क्या संदेश देना चाहेंगे ?

कोविड का मुकाबला सब मिलकर ही कर सकते हैं। कोविड खत्म नहीं हुआ है। आमजन हर चीज की जरूरत समझे। मास्क पहने, सोशल डिस्टेसिंग की पालना के साथ सैनेटाइजर का उपयोग करें। सरकार की गाइडलाइन का पालन करें।

यह है भीलवाड़ा मॉडल

भीलवाड़ा जिले में 20 मार्च 2020 को 6 कोरोना रोगी सख्त कर्फ्यू और लॉक डाउन लगाकर संक्रमण को रोका गया।

जिले की सीमाओं को सील कर दिया। रोगियों के सम्पर्क में आए लोगों को चिन्हित कर उन्हें आइसोलेशन सेंटर में रखा गया। 20 दिन के अंदर अधिकांश रोगी ठीक हो गए। इस मॉडल को प्रदेश व देश के कई हिस्सों में लागू किया गया।

नारायण सेवा ने 40 मजदूर परिवारों को दिया राशन

पिछले 36 सालों से मानव सेवा मंत्र के साथ हर जरूरतमन्द को मदद पहुंचाने वाली नारायण सेवा संस्थान ने गत शुक्रवार को उमरड़ा में राशन वितरण शिविर का आयोजन किया। जिसमें 40 मासिक राशन किट वितरित हुए। इस कीट में एक माह के लिये आटा, चावल, दाल, शक्कर और मसाले इत्यादि है। शिविर में दिलीप सिंह जी, मोहित जी मेनारिया आदि ने सेवाएं दी।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि कोरोना लॉकडाउन के चलते बेरोजगार हुए मजदूर परिवारों के सेवार्थ निदेशक वंदना जी अग्रवाल के नेतृत्व में शिविर लगाया गया।

मेरठ और परभणी में भी घर–घर भोजन सेवा

भोजन पैकेट बनाने में जुटी सेवाभावी साधक टीम

कोरोना संक्रमित परिवारों के सेवार्थ नारायण सेवा संस्थान के मुख्यालय पर शुरू हुई घर–घर भोजन सेवा की तर्ज संस्थान की शाखा मेरठ (यू.पी.) और परभणी (महाराष्ट्र) में भी निःशुल्क भोजन सेवा 25 अप्रैल से शुरू हुई है।

शाखा परभणी की संयोजिका मंजु दर्डा के नेतृत्व में 1800 से अधिक पैकेट तथा मेरठ में मूलशंकर मेनारिया के सहयोग से 900 से ज्यादा भोजन पैकेट वितरित किए जा चुके है। अन्य शाखाओं में भी भोजन, राशन एवं दवाइयां आदि की निःशुल्क सेवा शुरू की जायेगी। यह सेवाएं कोरोना की दूसरी लहर की समाप्ति तक निरन्तर रहेगी पीड़ित मानवता को बचाना संस्थान का सर्वोपरि धर्म है।

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कोरोना संक्रमितों के सेवार्थ नि:शुल्क सेवाएं

ऑक्सीजन सिलेंडर सेवा

अब तक नि:शुल्क 238 ऑक्सीजन सिलेण्डर दिये

'घर – घर भोजन' सेवा

अब तक घर–घर नि:शुल्क 48,544 भोजन पैकेट वितरित

कोविड पॉजिटिव बीमारों को कोरोना किट सेवा

अब तक नि:शुल्क 2341 कोरोना किट संक्रमितों को दिये

बीमार को एम्बुलेंस सेवा

बीमार को हॉस्पीटल पहुँचाते संस्थान कर्मी अब तक 278 जन लाभान्वित

हैड्रोलिक बेड सेवा

130 जन को हैड्रोलिक बेड कराये उपलब्ध

कोरोना प्रभावित 30,095 मजदूर परिवारों को राशन वितरण

हादसे में गंवा दिए दोनों हाथ, गोल्ड समेत 150 से ज्यादा जीत चुके हैं पदक....

केरियर डेस्कल जिनके पास हौसला होता है कामयाबी उन लोगों के पास जरूर आती है। रोल मॉडल में आज हम आपको एक ऐसे खिलाड़ी की कहानी बता रहे हैं जिसने कई मुश्किलों का सामना किया लेकिन हार नहीं मानी। इस खिलाड़ी का नाम है पिन्टू गहलोत। गहलोत ने बताया कि हमारा जीवन अप्रत्याशित है, लेकिन उतार–चढ़ाव के बीच आगे बढ़ाना भी आवश्यक है। यही कारण है कि मैंने खुद को प्रेरित करने और सभी को प्रेरित करने के लिए हर संभव कोशिश की। पिन्टू ने पैरा स्पोर्ट्स तैराकी में 2016 में 2 स्वर्ण और 1 रजत और 1 कांस्य पदक और 2017 में 3 स्वर्ण और 1 रजत जीता है। आइए जानते हैं पिन्टू कैसे समाज के लिए रोल मॉडल बन गए।

सड़क दुर्घटना में लगी चोट– 36 वर्षीय पिंटू गहलोत के दोनों हाथ गंवा देने के बावजूद, उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 150 से अधिक स्वर्ण पदक जीते हैं। तैराकी के शौकीन पिंटू को पहले बस–ट्रक दुर्घटना के कारण कंधे में चोट लगी। इसके बाद तैराक पैरा स्विमर पिंटू ने 2016 की राष्ट्रीय चौम्पियनशिप जीती।

संघर्ष कर पाई कामयाबी– 2019 में फिर से पिंटू के साथ एक दुर्घटना हुई, जिसमें पूल की सफाई करते समय झुलस गए। उपचार के दौरान, इलेक्ट्रोक्रेडेड हाथ को आधे में काटना पड़ा। यह वही हाथ था जिसने पिंटू के कई प्रतियोगिताओं को जीता था। लेकिन हार न मानते हुए, पिंटू खुद की समस्याओं से लड़ते हुए जीत हासिल करते रहे।

खिलाड़ियों को किया तैयार – लॉकडाउन के बाद, उन्होंने एक बार फिर 20–22 मार्च को बैंगलोर में आयोजित पैरा स्विमिंग की नेशनल चौम्पियनशिप में कांस्य पदक जीतकर अपना सपना पूरा किया। इसी मंशा के साथ, पिछले कई सालों से गहलोत राजस्थान पैरा स्वींमिंग टीम के साथ कोच के रुप में जुड़े हुए हैं। उनके निर्देशन में इस दौरान खिलाड़ियों ने 150 से भी अधिक स्वर्ण पदकों पर कब्जा जमाया है।

लोगों के लिए प्रेरणापिंटू गहलोत के जीवन के उतार–चढ़ाव को समझना इतना मुश्किल है और उससे ज्यादा जीना मुश्किल है। लेकिन पिंटू लोगों को प्रेरित करके आगे बढ़ रहे हैं, जिससे नारायण सेवा संस्थान न केवल खुश हैं बल्कि हमारी शुभकामनाएं भी उनके साथ हैं। साथ में, हम पिंटू गहलोत को वित्तीय सहायता के साथ अन्य सहायता प्रदान कर रहे हैं।

– प्रशान्त अग्रवाल, अध्यक्ष

सम्पादकीय

'मन के जीते जीत है' यह उक्ति बड़ी विलक्षण है। किसी भी बात की जीत या हार संकल्प की सिद्धि या कमजोरी पर निर्भर करती है। यदि मन में जीत की ठान ले तो फिर प्रत्यक्षतः जीत होनी ही है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिसने भी मन को सुदृढ़ व संकल्पित रखा उसे विपरीत परिस्थितियां भी प्रभावित नहीं कर सकी है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्यों, मन की जीत को कैसे बनाये रखें ? वस्तुतः मन की चंचलता ही हमें कमजोर कर सकती है। मन में यदि हीन भाव या स्वयं का सही मूल्यांकन न हो तो जीत दूर है। मन की चंचलता को नियंत्रित करने के लिये सद्विचारों की लगाम तथा संकल्पों का चाबुक जरूरी है। सद्विचार हमें सही मार्ग की ओर उन्नुख करेंगे तथा संकल्प उस मार्ग पर ले चलेंगे। ये दोनों पर यदि सध गये तो मन जीतेगा ही। इन दोनों पर यदि संशय हावी हो जाता है तो हार का सामना करना पड़ता है। मन को जीतना ही जीवन की सफलता की कुंजी है। संतोष की बात यह है कि सफलता की यह कुंजी हर मनुष्य के पास निहित है। मन को जीतने के लिये प्रयाण करें। 'शुभास्ते पंथान संतु।'

कुछ काव्यमय

जो मन को जीतेगा वो ही,
जनम सफल कर जायेगा।
धनात्मक जो भी सोचेगा,
वही सफल हो पायेगा।
राहें दुर्गम बन जायेंगी,
मन को यदि कमजोर किया तो।
वही सुगम बन के आयेंगी,
मन में हमने ठान लिया तो।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में निहित है दिव्यांगजनों की प्रगति की कुंजी

— प्रशान्त अग्रवाल

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डेटा साइंस का एक ऐसा क्षेत्र है, जिसने हाल के वर्षों में सभी कारोबारों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एआई या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक डेटा साइंस फंक्शन है जो कंप्यूटर को अनुभवों के माध्यम से सीखने और अपने स्वयं के स्तर पर ऐसे कार्य करने के लिए प्रशिक्षित करता है, जिन्हें कुछ इनपुट्स के साथ बेहतर तरीके से किया जा सकता है। ग्राहकों से संपर्क में सहायता के लिए उपयोग किए जाने वाले चौटबॉट्स से लेकर अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक एक लंबा सफर तय किया गया है और कहा जा सकता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक ऐसे शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है, जिसने पूरी दुनिया में कारोबार करने के तौर–तरीकों को बदल दिया है और इसीलिए आज पारस्परिक संपर्क के लिए दुनियाभर के व्यवसायों और सेवाओं में इसका इस्तेमाल किया जाता है। दरअसल एआई एक उपकरण है जो एआई पेशेवरों द्वारा फीड किए गए डेटा के माध्यम से विशिष्ट कार्यों को करने के लिए डेटा पैटर्न को पहचानता है। हाल के दिनों में जहां नई टैक्नोलॉजी बहुत कम समय में उन्नत हो रही हैं, वहीं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की अवधारणा का उपयोग विभिन्न कॉरपोरेट्स द्वारा ऐसी सहायक तकनीकों के निर्माण के लिए किया गया है, जो कि दिव्यांग जनों के लिए उपयोगी साबित हो सकती हैं।

एआई को अपनाने से अर्थव्यवस्थाओं में सीधे तौर पर व्यापक परिवर्तन नजर आ रहा है, साथ ही क्षमताओं का निर्माण करने के लिए भी एआई का उपयोग किया गया है। गार्टनर द्वारा हाल ही में जारी किए गए अध्ययन के अनुसार यह भविष्यवाणी की गई है कि वर्तमान में प्रबंधकों द्वारा किया जा रहा 69 प्रतिशत कार्य 2024 तक पूरी तरह से स्वचालित हो जाएगा। भारत सरकार को भी समावेशी विकास के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में भरपूर संभावनाएं नजर आ रही हैं। यही कारण है कि सरकार ने एआई पर एक टास्क फोर्स की स्थापना की है और नीति आयोग को निर्देश दिए हैं कि वह एआई को लेकर एक राष्ट्रीय रणनीति तैयार करे।

देश अपनी 4.0 औद्योगिक क्रांति में अपने एआई समाधानों के माध्यम से प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करना चाहता है जो अतिरिक्त लागत लाभ के साथ उत्पादकता बढ़ा सकते हैं। इस तरह व्यवसायों को श्रम की तुलना में थोड़ा अधिक लागत उत्पादक और लाभदायक बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस प्रकार हमारा देश क्षमताओं का निर्माण करके डिजिटल दुनिया में व्याप्त वैश्विक विभाजन को कम करने की पूरी कोशिश कर रहा है। नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक हालिया लेख के अनुसार भारत का शिक्षा जगत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक को अपनाने के लिए पूरी तरह तैयार है। लेख में कहा गया है कि वर्ष 2030 तक दुनिया में सबसे अधिक युवा लोग हमारे देश में होंगे। इस दौर में एआई का उपयोग दिव्यांग लोगों के लिए भी फायदेमंद साबित हुआ है, क्योंकि अधिक से अधिक संगठन एआई को अपना रहे हैं और वे दिव्यांग लोगों को भर्ती करने के लिए तत्पर हैं, जो उन्हें परिवर्तनों के लिए अधिक अनुकूल बनाते हैं। एक तरह से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कार्यस्थलों पर विविधता को बढ़ावा देता रहा है। गार्टनर की रिपोर्ट बताती है कि संगठनों से जुड़े 75 प्रतिशत प्रमुखों को कुशल प्रतिभा की कमी का सामना करना पड़ रहा है। चूंकि प्रतिभाशाली दिव्यांग जनों की प्रतिभा का अभी पूरी तरह इस्तेमाल नहीं हो पाया है, ऐसे में अधिकांश संगठन अब एआई के साथ खुद को लैस कर रहे हैं ताकि इन दिव्यांग उम्मीदवारों को स्किलिंग और प्रशिक्षण प्रदान करके उन्हें और भी अधिक सक्षम बनाया जा सके और उनकी प्रतिभा का उपयोग हो सके। इस तरह कार्यस्थल में भी विविधता नजर आने लगी है, जहां अब बड़े संगठनों द्वारा भी दिव्यांग जनों को स्वीकार किया जाने लगा है।

गार्टनर की रिपोर्ट में आगे विस्तार से बताया गया है कि 2023 तक नौकरी करने वाले दिव्यांग जनों की संख्या आज की तुलना में तीन गुना हो जाएगी, क्योंकि एआई की सहायता से कार्यस्थल की बाधाओं को कम किया जा सकेगा। गार्टनर का अनुमान है कि दिव्यांग लोगों को सक्रिय रूप से नियुक्त करने वाले संगठनों में कर्मचारियों के कायम रहने की दर 89 प्रतिशत रही है और इसके साथ ही कर्मचारी उत्पादकता में 72 प्रतिशत और संगठन की लाभप्रदता में 29 फीसदी की वृद्धि हुई है।

एआई ने दिव्यांग जनों के लिए कई विकल्प खोले हैं, जिससे उनके लिए कार्यस्थल में अधिक समावेशिता को जोड़ा जा सका है। दिव्यांग लोगों के लिए हाल के दौर में सामने आए कुछ और दिलचस्प विकल्पों में एक विकल्प है रेस्तरां का कारोबार, जहां वर्चुअल रियलिटी और ब्रेल को लागू करते हुए दिव्यांगों के लिए नए अवसरों का सृजन किया गया है। कई संगठनों ने अपने यहां सक्रिय रूप से एआई रोबोटिक्स टैक्नोलॉजी को लागू किया है, जिसमें दिव्यांग जनों द्वारा रोबोटिक्स को नियंत्रित किया जाता है और वे ही उसका रख–रखाव भी करते हैं।

इधर जबकि एआई के माध्यम से दिव्यांग जनों के लिए नए विकल्पों को विकसित किया जा रहा है, दूसरी तरफ एक्सेंचर की 'रीवायर फॉर ग्रोथ' शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से वर्ष 2035 तक देश की अर्थव्यवस्था में लगभग 957 बिलियन डॉलर जोड़ने की क्षमता है। समग्र रूप में एआई में वह क्षमता है जो मशीन लर्निंग के साथ इन्फ्रास्ट्रक्चरल ग्रोथ के माध्यम से अनेक कारोबारों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डीप लर्निंग नेत्र विज्ञान के क्षेत्र में भी फायदेमंद साबित होगी। यह टैक्नीक स्क्रीनडायबेटिक रेटिनोपैथी (डीआर) और रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमैच्योरिटी (आरओपी) के लिए भी फायदेमंद होगी।

एआई ने कैरियर के अनेक ऐसे नए विकल्पों को खोलने में भी मदद की है, जहां सहायक तकनीक जैसे रीयल टाइम टैक्स्ट टू स्पीच और टैक्स्ट ट्रांसलेशन सिस्टम का उपयोग शिक्षकों द्वारा अपने छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए किया जाता है। इनका उपयोग क्षेत्रीय भाषाओं में मूल रूप से सूचना का प्रसार करने के लिए किया गया है जो वास्तव में दिव्यांग जनों के कौशल के लिए बनाए गए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के ड्राट के अनुरूप है। एआई तकनीक में एक और विकास बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन से संबंधित है, जिसका उपयोग छात्रों और शिक्षकों दोनों की उपस्थिति को दर्ज करने के लिए किया जाता है।

इस तरह यह तकनीक कर्मचारियों की उपस्थिति और अन्य प्रशासनिक कार्यों को रिकॉर्ड करने के लिए फायदेमंद साबित हुई है। बॉयोमीट्रिक अटेंडेंस शिक्षकों और युवाओं दोनों की उपस्थिति के अनुपात को चिह्नित करने के लिए भी फायदेमंद साबित हुई है और इस तकनीक के माध्यम से उच्च शिक्षा के लिए पुरुष–महिला नामांकन के अनुपात की सटीक जानकारी मिल सकती है। छात्रों की शंकाओं और उनके सवालों के जवाब देने के लिए चौटबॉट्स का उपयोग किया जा रहा है, जिन्हें दरअसल विषय विशेषज्ञों ने तैयार किया है। नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग का इस्तेमाल दीक्षा, ई–पाठशाला और स्वयंम (स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स) जैसे प्लेटफार्मों पर बड़े पैमाने पर आकलन के स्वचालित ग्रेडिंग के लिए किया जा सकता है। इसमें सिर्फ वस्तुनिष्ठ प्रश्न ही नहीं, वर्णनात्मक सवालों को भी शामिल किया जा सकता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि शिक्षा क्षेत्र ने एआई के इस्तेमाल के साथ ही दिव्यांग जनों के लिए अनेक नए विकल्प खोल दिए हैं। इस राह में अनेक बाधाएं भी सामने आ सकती हैं, लेकिन निश्चित रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक सभी क्षेत्रों में नए अवसरों का सृजन करेगी, खास तौर पर शिक्षा के क्षेत्र में जहां दिव्यांग जनों के लिए यह तकनीक बेहत फायदेमंद साबित हो सकती है।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश को अपने कार्यालय के पोस्ट मास्टर आई.एम.चौधरी से बहुत प्रेरणा मिली। वे सदा प्रसन्न रहते थे, मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों का भी हंस कर सामना करते थे। एक दिन कैलाश ने उनसे उनकी प्रसन्नता का राज पूछ लिया तो उन्होंने हंसते हंसते बताया कि उनके 5 लड़कियां है और वह छोटी सी नौकरी, यदि प्रसन्न नहीं रहूं तो तनाव से ही मर जाऊं। कैलाश ने यह बात गांठ बांध ली कि विषम से विषम परिस्थिति में भी धैर्य नहीं खोना और प्रसन्न रहना।

कैलाश की एक आंख बचपन से ही खराब थी। एक मित्र सोहनलाल पाटनी ने उसे बताया कि पास ही बीसलपुर गांव में राजमल जैन नामक एक समाज सेवी हैं जो आंखों के केम्प लगाते हैं। दूर दूर से बड़े बड़े डाक्टर केम्प में आकर आंखों का ऑपरेशन, इलाज करते हैं। कैलाश ने राजमल को एक पोस्टकार्ड डाला तो तुरन्त जवाब आ गया कि बीसलपुर आ जाओ।

कैलाश राजमल से मिल कर और उनकी सेवा भावना देख कर बहुत प्रभावित हुआ। राजमल व्यवसायी थे, उनका कार्य भिवण्डी, मुम्बई में चलता था मगर उन्होंने अपना जीवन जनसेवा को समर्पित कर दिया था, भैरव नेत्र यज्ञ समिति के अन्तर्गत वे नेत्र रोग शिविरों का आयोजन करते थे।

एक बड़े नेत्र रोग विशेषज्ञ को कैलाश ने अपनी आंख दिखाई। डा. ने उसे राजकोट आने को कहा। नई नई नौकरी थी, अभी राजकोट जाना संभव नहीं था मगर स्वयं की आंख मानो उसके लिये गौण हो गई और राजमल के सेवा कार्य से वह सम्मोहित हो गया।

रात को सभी लोग साथ बैठे बातें कर रहे थे तभी किसी का फोन आया। फोन सुनकर यकायक राजमल उदास हो गये। कैलाश ने पूछा तो बताया शिकवे समीप के एक गांव में सात दिन का शिविर आयोजित कर रहे हैं, मगर उनके साथ जाने वाले एक कार्यकर्ता को मलेरिया हो गया है इसलिये उसने आने से मना कर दिया है।

अंश-29